फरवरी 2022

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड			परीक्षा का माध्यम
पशुपालन	4	3	0	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक – 321 – 2778306

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

2	2	6	4	3	2	1	5	2

शब्दों में

दो	दो	छः	चार	तीन	दो	एक	पाँच	दो

BOARD ... BHOPAL
माध्यमिकशिक्षामण्डल ... शिक्षामण्डल,म.प्र., ... माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर ...

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

क – पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंको में ✗ शब्दों में ✗

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक हॉल

ग – परीक्षा की दिनांक 21 02 2022

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकण्डरी सर्टी. परीक्षा

C.N.641039

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
R.S. Malviya	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तनुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया अन्दर के पृष्ठों के अनुरुप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदाकिंत संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

R.S. Sisodiya (H.S. Teacher) Govt. H.S.S. Kanewar V.No.-3375 Mob. 9893090995

(Adhyapak) Govt. Exc. H.S.S. V.No.

नोट :– ''हायर सेकेन्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयो में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्या पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित वि

केवल परीक्षक द्वारा भरा जायें

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंको में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

विशेष नोट :– सिलाई खुली हुई अथवा क्षतिग्रस्त उत्तर पुस्तिका को न तो पर्यवेक्षक वितरण करें और न ही छात्र उपयोग में लें। ऐसी उत्तर पुस्तिका में लिखें उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें →

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायें →

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें →

प्रश्न क्र.

—: प्र॰ क्रमांक - (1) का उत्तर

(i). उत्तर :— 9.3 कैलोरी ।

(ii). उत्तर :— प्रोटीन ।

(iii). उत्तर :— उपर्युक्त सभी ।

(iv). उत्तर :— दस्त ।

(v). उत्तर :— विषाणु ।

—: प्र॰ क्रमांक - (2) का उत्तर

(i). उत्तर :— 56 से 58 ।

(ii). उत्तर :— क्लॉस्टीडियम सोविसाई ।

(iii). उत्तर :— पास्च्युरेला बुवेसेप्टिका ।

(iv). उत्तर :— बारे ।

(v). उत्तर :— लोहे ।

(vi). उत्तर :— भोजन ।

*. *. *. *.

M
P
B
S
E

प्रश्न क्र.

—— : प्र. क्रमांक - (3) का उत्तर

(I) उत्तर :—

"अ" "ब"

(i) सानेन — स्विट्जरलैण्ड

(ii). मराड़ी — अफ्रीका

(iii). अल्पाइन — फ्रांस

(iv). मक्खन काटने की मशीन — नाइफन

(v). मक्खन पीटने या पलटने वाला यन्त्र - स्कॉच हैंड

—— : प्र. क्रमांक - (4) का उत्तर

(i) उत्तर - दही में बनाने में उपयोगी जीवाणु का नाम स्ट्रेप्टोकोकस लेक्टिस है।

(ii). उत्तर - दुग्ध चूर्ण में वसा की मात्रा 18 - 20% होती हैं।

(iii). उत्तर - फीके संघनित दूध में ठोस पदार्थ की मात्रा 20 से 25 % पायी जाती है।

(iv). उत्तर - दूध में लेक्टोज शर्करा पायी जाती हैं।

(v). उत्तर - दुग्ध चूर्ण में कुल ठोस पदार्थ 60 से 80 % पाया हैं।

M P B S E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARY

प्रश्न क्र.

(vi). उत्तर – पीयूष ग्रन्थि ।

—: प्र. क्रमांक – (5) का उत्तर

(i). उत्तर- सत्य ।

(ii). उत्तर- असत्य ।

(iii). उत्तर- सत्य ।

(iv). उत्तर- सत्य ।

(v). उत्तर- असत्य ।

(vi). उत्तर- असत्य ।

—: प्र. क्रमांक – (6) का उत्तर

उत्तर :- विषाणु जनित रोग –
(i). खुरपका – मुँहपका,
(ii). चेचक ।

— : प्र. क्रमांक- (7) का उत्तर

उत्तर :- को रोगों की रोकथाम के उपाय :-
(i). पशु साफ एवं स्वच्छ स्थान पर बाँधना चाहिए।
(ii). पशु को स्वच्छ एवं ताजा पानी पिलाना चाहिए।

प्रश्न क्र.

—: प्र• क्रमांक-(8) का उत्तर

उत्तर :— मछलियों के रोगों के नाम -:
(i). ड्रोप्सी रोग,
(ii). गिल रॉट (गलफड़े सड़-गल जाना)।

—: प्र• क्रमांक-(9) का उत्तर

उत्तर :— नर पशुओं के बधिका बधियाकरण के लाभ-
(i). नर पशुओं को बधिया करने से चर्बी बढ़ने लगती है।
(ii). माँस की गुणवत्ता बढ़ जाती है। टीजर बुल के रूप में काम लाया जा सकता है।

—: प्र• क्रमांक-(10) का उत्तर

उत्तर :— घी के नवीनीकरण के लाभ -
(i). घी की खटास दूर हो जाती है।
(ii). घी फिर से ताजा एवं सुवासप्रिय हो जाता है।

—: प्र• क्रमांक-(11) का उत्तर

उत्तर :— खोआ बनाते समय सावधानियाँ -
(i). प्रारम्भ में आग तेज रखे एवं दूध गाढ़ा होने पर आग को थोड़ा कम कर दे।
(ii). पलटा चौड़ा होना चाहिए। प्रारम्भ में पलटा धीरे-धीरे बाद में तेज चलाना चाहिए।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

—: प्र. क्रमांक - (12) का उत्तर

उत्तर :— दुग्ध चूर्ण :—

दुग्ध चूर्ण वह पदार्थ है, जिसे सुखाकर प्राप्त किया किया जाता है, जिसमें नमी की मात्रा सदैव 3% से कम होती है।

दुग्ध चूर्ण बनाने की विधि :— फुहार शुष्कन विधि।

—: प्र. क्रमांक - (13) का उत्तर

उत्तर :— आदर्श कुक्कुट शाला के गुण :—

(1). आदर्श कुक्कुट शाला में पर्याप्त स्थान हो।

(2). हवादार एवं प्रकाशयुक्त होना चाहिए।

—: प्र. क्रमांक - (14) का उत्तर

उत्तर :— भोजन के कार्य :—

(1). भोजन शरीर को ऊष्मा प्रदान करता है।

(2). भोजन से पशु को विटामिन एवं खनिज लवण प्राप्त होते हैं।

भोजन प्रजनन में सहायक है। भोजन पशु के टूटे-फूटे ऊतकों की मरम्मत करता है।

—: प्र. क्रमांक - (15) का उत्तर

उत्तर :— भारत में साइलेज के कम प्रचलित होने के कारण निम्नलिखित है —

(1). साइलेज बनाने में धन एवं श्रम अधिक लगता है।

M P B S E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDA

प्रश्न क्र.

(II). साइलेज बनाने में थोड़ी-सी कमी रह जाने पर चट खराब हो जाता हैं।

(III). भारतीय किसान निर्धन होने का के कारण धन खर्च नहीं करना चाहते हैं।

(IV). साइलेज बनाने तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती हैं।

—: प्र. क्रमांक - (16) का उत्तर

उत्तर :— ग्याभिन गाय के लक्षण —

(I). गाय पुनः मदकाल में नहीं आती हैं।

(II). गाय नर्म एवं शान्त स्वभाव धारण कर लेती हैं।

(III). गाय का धीरे-धीरे वजन बढ़ने लगता है तथा पेट का आकार भी बढ़ने लगता हैं।

—: प्र. क्रमांक - (18) का उत्तर

उत्तर :— पशु चिकित्सा में उपयोगी उपकरण —

(I). थन साइफन — यह यंत्र थनैला रोग में थन से रुका हुआ दूध निकालने के काम आता हैं।

(II). ट्रेकार या कैन्यूला - यह यंत्र अफारा रोग में पशु के पेट से गैस निकालने में काम आता हैं।

(III). लार्डिजो कास्ट्रेटर — यह यंत्र नर पशुओं को बधिया करने के काम आता हैं।

(IV). धमनी चिमटी - यह चिमटी रक्त प्रवाह को रोकने के काम आती हैं।

*. *. *. *.

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

— : प्र॰ क्रमांक – (19) का उत्तर ॥

उत्तर :— भारत में मुर्गीपालन का महत्व :—

(I). मुर्गीपालन में पूँजी की लागत बहुत कम होती है, जिसके कारण कोई भी व्यक्ति यह व्यवसाय शुरु कर सकता है।

(II). मुर्गीपालन से फसल के लिए एक श्रेष्ठ खाद प्राप्त होती है। एक अनुमान के अनुसार 50 पक्षियों से एक वर्ष एक टन खाद प्राप्त होती है।

(III). भारत में मुर्गीपालन एक कुटीर उद्योग के रूप में चलाया जा रहा है, जिससे अनेक लोगों को रोजगार मिल रहा है।

(IV). अण्डे प्रोटीन का अपार भण्डार है। अण्डे की प्रोटीन दाल से भी सस्ती पड़ती है।

(V). मुर्गीपालन में अधिक श्रम की आवश्यकता नहीं होती है। इस व्यवसाय में बहुत कम समय में आय प्राप्त होने लगती है। ॥

संक्षेप में – मुर्गीपालन भारतीय लोगों के लिए अपनी आजीविका चलाने के लिए एक अच्छा एवं सरल माध्यम है।

*. *. *. *.

MPBSE

प्रश्न क्र.

—: प्र. क्रमांक - (20) का उत्तर

उत्तर :- मुर्गियों के आहार में जल के कार्य :—

(I). जल भोजन को घोल का रूप प्रदान करता हैं।
(II). जल उत्सर्जन में सहायक हैं।
(III). जल कोशिका की वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देता हैं।
(IV). जल जनन में सहायक हैं।
(V). जल एक सर्वविलायक के रूप में कार्य करता हैं।
(VI). जल रक्त को पतला करता हैं।

संक्षेप में - जल मुर्गियों में एक महत्वपूर्ण एवं जरूरी अवयव हैं।

—: प्र. क्रमांक - (17) का उत्तर

उत्तर :- बर्ड फ्लू के निम्न लक्षण हैं —

(I). कुछ ही समय में अनेक मुर्गियाँ मर जाती हैं।
(II). मुर्गियों की गर्दन मुड़ जाती है, तथा पूरी तरह से लकवा मार जाता हैं।
(III). मुर्गियाँ खाना - पीना छोड़ देती हैं।

उपर्युक्त लक्षण बर्ड फ्लू रोग होने पर पक्षी में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

*. *. *.

MPBSE